प्रकाशन तिथि : 01 मार्च, 2021
प्रेषण तिथि : 04 मार्च, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 24 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

उपलब्धि नही अवसर समझें : संघप्रमुख श्री

बाड़मेर

(बाड़मेर व पाली में जनप्रतिनिधियों की कार्यशाला संपन्न)

पाली

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में राणी रूपादे संस्थान बाड़मेर में एक दिवसीय राजपूत जनप्रतिनिधि कार्यशाला 14 फरवरी को सम्पन्न हुई, जिसमें जिले भर के पंचायती राज जनप्रतिनिधियों व पार्षदों ने भाग लिया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख माननीय भगवान सिंह रोलसाबसर ने कहा कि आप जो सरपंच इत्यादि बने हैं, इसे उपलब्धि नहीं अवसर समझें। परिस्थितियां ऐसी बनीं, जनता का सहयोग रहा और ईश्वर की कृपा से आपको एक अवसर मिला है। इसका सदुपयोग करें। आप जो बने हैं उसके अधिकारों व कर्तव्यों की जानकारी आपको होनी चाहिए। अधिकार मांगे जाते हैं और कर्तव्य निभाये जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण है कर्तव्यों को समझना। आप नेता हैं, पार्टी कोई भी हो आपके सहयोग के बिना उसका कार्य सम्भव नही है। जनता ने आपका सहयोग किया, अब आपकी बारी है, आप जनता के सुख दुःख के भागीदार बनें और उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करें, ये साबित कर दें कि जनता ने ठीक फैसला किया था। तब आप सिर ऊंचा करके अगली बार जनता के बीच में जा सकेंगे। आगे संघ प्रमुख श्री ने कहा कि जीवन में अध्ययनशील बनें, पराक्रमी बनें,अच्छी आदतें सीखें और सब कार्य करते हुए भी भगवान को न भूलें। तटस्थ भाव से रहें और गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी ईश्वर प्राप्ति की ओर बढ़ते जाएं। कार्यशाला में उपस्थित सरपंच संघ के जिला अध्यक्ष हिन्दू सिंह तामलोर, पृथ्वी सिंह रामदेरिया, बाड़मेर नगर परिषद उप सभापति सुल्तान सिंह देवड़ा, अमर सिंह पाटौदी, स्वरूप सिंह धारवी, तन सिंह भिंयाड़, देरावर सिंह चोचरा, कोजराज सिंह सिणेर, सोहन सिंह भायल, समुंदर सिंह फोगेरा, हमीर सिंह केलनोर, वीर सिंह सेला, देवी सिंह कीतपाला, गुलाब सिंह सोढा, प्रेम सिंह नागड़दा, कैलाश सिंह कोटड़ा, परबत सिंह परेउ, तन सिंह सनाऊ, पूर सिंह चाडियाली, खेत सिंह कोटड़ी आदि जनप्रतिनिधियों ने अपने विचार रखें। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने कहा कि हम सभी में समाज की पीड़ा है और जैसा कि आप सबने कहा कि आपको संघ में विश्वास है तो संघ को भी आपमें विश्वास है। संघ की गतिविधियों में समय दें। शाखाओं में भाग लेवें। वर्चुअल शाखा में जुड़ें। संघ प्रतिवर्ष महापुरुषों की जयंतियां मनाता है उनमें पूरे उत्साह से भाग लेवें। ये वर्ष संघ का हीरक जयंती वर्ष है, पूरे वर्ष कार्यक्रम होंगे, आप इनमें सहभागी बनें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री प्रताप फाउंडेशन ने लिखा प्रधानमंत्री को पत्र

पूर्वी उत्तरप्रदेश के बहराईच क्षेत्र में महमूद गजनवी के रिश्तेदार सालार मुहमद के आक्रमण को विफल कर उसे मारने वाले वीर शासक महाराजा सुहेलदेव बैस के कुल को विवादास्पद बनाकर उन्हें पासी या राजभर घोषित किए जाने के प्रयासों के बीच श्री प्रताप फाउंडेशन ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर ऐसे प्रयासों के खिलाफ अपना आक्रोश प्रकट किया एवं ऐसे विवाद को समाप्त करवाने का आग्रह किया। साथ ही 16 फरवरी को प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित किए जाने वाले महाराजा सुहेलदेव के स्मारक में उनकी मूल पहचान को बनाए रखने का आग्रह किया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

परमार शासक राजा भोज की जयंती मनाई

चक्रवर्ती सम्राट भोज परमार की जयंती पंचमी तद्नुसार 16 फरवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा प्रातः 7 बजे संघ के सोशल मीडिया अकाउंट्स के माध्यम से वर्चुअल मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने राजा भोज के इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वे वीर होने के साथ जीवन के सभी पक्षों यथा साहित्य, कला, न्याय आदि क्षेत्रों में अग्रणी थे। वे महान सम्राट विक्रमादित्य की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले शासक थे। हमें हमारे महान पूर्वजों का निरन्तर स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। जालोर जिले के आकोली में भौतिक रूप से जयंती मनाई गई। संभाग प्रमुख

अर्जुनसिंह ने कहा कि क्षत्रिय समाज के महापुरुषों ने मानवीय मूल्यों और संस्कारों के जो आयाम स्थापित किए वो भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं। मानव, महिला, धरा और जीव-जंतुओं की रक्षा के लिए शौर्य, दान शीलता, वीरता, त्याग, तपस्या, अध्ययन, भक्ति, वीरता, साहित्य ज्ञान जैसी परंपराएं क्षत्रिय समाज में अग्रणी रही हैं। हमें आज प्रजातांत्रिक प्रणाली में इन मालवीय मूल्यों को समझते हुए कार्य करने की आवश्यकता है। यही काम समाज में पथ प्रदर्शक के रूप में श्री क्षत्रिय युवक संघ लगातार कर रहा है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हवाई अड्डे के नामकरण की मांग

जयपुर स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का नामकरण महाराजा सवाई मानसिंह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा करने की मांग करते हुए राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री को पत्र लिखा है। पत्र में लिखा है कि सवाई मानसिंह राजस्थान के प्रथम राज प्रमुख एवं आधुनिक जयपुर के निर्माता थे। उन्होंने जयपुर में कई स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल, हवाई अड्डा, स्टेडियम, पोलो क्लब आदि बनवाए। (शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में उल्लेखित वीरवर राव सीहाजी राठौड़ के संदर्भ में।

राजस्थान का प्राचीनतम इतिहास शूरवीरों की गौरव गाथाओं से भरा पड़ा है। धर्म, ध्वजा, मंदिर, गो, ब्राह्मण, धरती एवं नारी की रक्षार्थ स्वयं का सर्वस्व होम देने की अक्षुण्ण परम्परा इस पतंगाकार प्रदेश के कण-कण को युगों-युगों से आप्लावित करती रही है तथा जब कभी भी इन्हें पद दलित करने का कुप्रयास किया गया तब समर बांकुरों की तीर्थस्थली मरूभूमि मारवाड़ की रेतीली मुस्कराहट भरी इस वीर प्रसूता धरती ने अपनी कौख से किसी न किसी वीर सपूत को पैदा कर वीरता के सृजन का नित्य आसवपान किया है। रण कौशल, वीरता, शौर्य और बलिदान की यहां अनवरत परम्परा रही है। इसी सुदीर्घ एवं गौरवशाली परम्परा को गगनचुम्बी उत्कर्ष प्रदान करने के लिए अदम्य साहस के साथ वीरता के पूंजीभूत प्रतीक की मूक गवाह बनकर स्वयं की सार्थकता सिद्ध कर रही है- एक अमर गाथा : राजस्थान में राठौड़ राज्य के संस्थापक वीरवर राव सीहाजी राठौड़ की। शौर्य एवं दानवीरता के अधिपति राव सीहाजी कन्नौज से द्वारकाधीश दर्शनार्थ जाने का विचार कर अपने दो सौ अश्वरोहियों के साथ तीर्थाटन हेतु जा रहे थे, इस दौरान तीर्थराज पुष्कर में स्नान हेतु ठहरे। उस समय मेर-मीणों के आक्रमणों से त्रस्त पालीवाल ब्राह्मण सीहाजी से मिले तथा उन्हें आतंक से मुक्ति दिलाने का निवेदन किया, जिसे राव सीहाजी ने क्षत्रियोचित कर्तव्य के रूप में सहर्ष स्वीकार कर उन्हें आततायियों से मुक्त कराया। 1212 ई. में राव सीहाजी के पाली आगमन के संदर्भ में यह जनश्रुति प्रचलित है -

बारा सौ बारोतरै, पाली कियो प्रवेस।
सीहो कज्वस छोड़ने, आयो मुरधर देस।।

राव सीहाजी महान साहसी एवं दूरदर्शी शासक थे। उनके मारवाड़ आने (आगमन) का कारण अनेक इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न बताया है। लेकिन आमतौर पर तीर्थाटन हेतु द्वारिका प्रस्थान को अधिक उपयुक्त माना है। राव सीहाजी फगत मारवाड़ के राठौड़ के पूर्वज नहीं थे बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं गुजरात के राठौड़ राजपूतों के अतिरिक्त मुहणोत खांप के महानजन भी उन्हीं संतति है। राव सीहाजी के तीन पुत्र आस्थान जी, सोनग जी व अजजी हुए।

संदर्भ ग्रंथ : 1. पूनम प्रकाश, मदनसिंह राठौड़, पृष्ठ 30
2. (1) मारवाड़ का इतिहास, पं. विश्वेश्वर नाथरेऊ, पृष्ठ 40
(2) मारवाड़ राज्य का इतिहास, जगदीश सिंह गहलोत, पृष्ठ 71

त्रिपुरी का कलचुरी - चेदि राजवंश

गांगेयदेव के बाद उसका पुत्र कर्णदेव (1041 ई.-1070 ई.) शासक बना। वो ना केवल अपने वंश का वरन् अपने युग का एक शक्तिशाली व योग्य शासक था। कर्णदेव के अनेक अभिलेखों से उसकी उपलब्धियों के बारे में पता चलता है। उसने प्राचीन शासकों की तरह ही दिग्विजय की नीति को अपनाया। भेड़ाघाट के लेख के अनुसार उसके प्रताप और विक्रम के सामने पाण्डेय देश के राजा ने अपनी उग्रता छोड़ दी, मुरलों ने गर्व छोड़ दिया, कुमों ने सीधी चाल ग्रहण की। गुजरात के चालुक्य शासक भोज के साथ मिलकर मालवा पर आक्रमण किया और मालवा की राजधानी धार को लूटा। उसने कंलिग पर विजय प्राप्त की और 'त्रिकंलिगाधिपति' की उपाधि धारण की। पूर्व की ओर उसने गौड़ तथा मगध के पालों को परास्त किया, कालान्तर में पाल शासक विग्रहपाल को उसने अपना दामाद बना लिया। चन्देलों के साथ भी कर्ण देव का युद्ध हुआ और कर्णदेव ने चन्देल शासक देववर्मन को परास्त कर उसके राज्य के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया। परन्तु अपने शासन काल के अंतिम वर्षों में कर्णदेव को चन्देल शासक कीर्तिवर्मन के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। जिससे कर्णदेव की शक्ति को आघात पहुंचा। कर्णदेव एक निर्माता भी था, उसने अपने नाम पर कर्णावती नगरी बसाई, जिसके आज केवल भग्नावशेष ही दिखाई देते है। कर्णदेव भी शैव मतानुयायी था तथा बनारस में उसने कर्णमेरू नामक एक शैव मंदिर का निर्माण करवाया था। वह शैव मतानुयायी था लेकिन सभी धर्मों को समान रूप से दान दक्षिणा देता था। सारनाथ के बौद्ध भिक्षुओं के लिए उसने अनेक सुविधाओं की व्यवस्था की थी। प्रयाग तथा काशी में भी उसके द्वारा दान का अभिलेखों में वर्णन आता है। कर्णदेव की मृत्यु के बाद कलचुरियों की शक्ति क्षीण होने लगी। अयोग्य शासकों के कारण कलचुरि साम्राज्य का विघटन होता चला गया। कर्णदेव के उत्तराधिकारी यशकर्ण तथा फिर गयकर्णदेव हुए जिन्हें गडवाल, परमार तथा चन्देल शासकों से पराजय का सामना करना पड़ा। बाहरवीं सदी के अंत तक किसी न किसी तरह कलचुरी वंश ने अपना अस्तित्व बनाए रखते हुए महाकौशल क्षेत्र में अपनी सत्ता बनाए रखी, लेकिन तेरहवीं सदी के प्रारम्भ में इस वंश के अंतिम शासक विजयसिंह देव को चन्देल शासक त्रैलोक्य वर्मन ने परास्त कर त्रिपुरी को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। इस वंश के महान शासकों ने अपनी उपलब्धियों से भारतीय संस्कृति के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया।

आरक्षण की विसंगतियों बाबत ज्ञापन

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियों एवं नौकरियों में राजस्थान के मूल निवासियों को वरीयता देने बाबत 10 फरवरी से ज्ञापन देने प्रारम्भ किए गए जो 17 फरवरी तक दिए गए। विगत अंक में 13 फरवरी तक के समाचार प्रकाशित हुए। उसके बाद 15 फरवरी को जोधपुर के ओसियां, शेरगढ़, बालेसर, लूणी, तिंवरी, जिला मुख्यालय जोधपुर, बाप, देचू, बापिणी, बावड़ी, फलोदी, सेखाला, पीपाड़ सिटी में ज्ञापन दिए गए। इसी दिन बाड़मेर के धोरीमन्ना व समदड़ी में, बीकानेर के श्री डूंगरगढ़ व लूणकरणसर, सिरोही के शिवगंज व सीकर के पलसाना में ज्ञापन दिए गए। 16 फरवरी को जालोर जिला मुख्यालय, भोपालगढ़ व बिलाड़ा (जोधपुर), गुड़ामालानी (बाड़मेर), मावली (उदयपुर) में ज्ञापन दिए। 17 फरवरी को खींवसर (नागौर), चित्तौड़गढ़, बज्जु व कोलायत (बीकानेर) में ज्ञापन दिए गए।

डॉ. दिलीप कुमार सिंह : पीड़ित और निराश्रय ग्रामवासियों के मसीहा

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन भागलपुर बिहार के 'गॉड फादर' माने जाने वाले डॉ. दिलीप कुमार सिंह ने गरीब और निःसहायों को जीवनदान देने के लिए चिकित्सकीय पेशा और ग्रामीण अंचल को अपना कार्य स्थल बनाया। डॉ. सिंह सुपुत्र स्व. यमुना प्रसादसिंह का जन्म 26 जून 1926 को हुआ था। 1952 में उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की उपाधि प्राप्त कर इंगलैण्ड से 'डिप्लोमा इन मेडिसन एण्ड हाइजीन' की डिग्री हासिल की। पढ़ाई पूरी करने के उपरान्त अमेरिका में जाकर नौकरी की लेकिन देश सेवा करने की भावना ने उन्हें स्वदेश लौटने के लिए बाध्य कर दिया। अमेरिका से

लौटकर वे सीधे अपने गांव पीरपैंती पहुंचे और गरीबों का इलाज करना प्रारम्भ कर दिया। जिस दौर में उन्होंने इलाज करना शुरू किया था, उस समय छुआछूत जैसी सामाजिक बुराई चरम पर थी। पैरपैंती में न सड़क थी, न बिजली और न ही टेलीफोन की सेवा। जिस किस गांव से मरीज की सूचना मिलती थी तो वे पैदल ही उस गांव में जाकर इलाज करते थे। रात को ढिबरी (लालटेन) जलाकर इलाज करते थे। 1953 में भागलपुर के अनेक प्रखण्डों में हैजा फैला तो वे इसके इलाज में काफी सक्रिय रहे और देश में पोलियो के इलाज में भी अहम भूमिका निभाई और लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया। डॉ. दिलीप के पुत्र संजयसिंह, पुत्रवधु प्रतिभा समेत पौत्र भी डॉक्टर है। डॉ. दिलीप कुमार सिंह को 68 वर्ष से निरन्तर सेवा एवं चिकित्सकीय सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 93 वर्ष की आयु में 26 जनवरी 2021 को पद्मश्री प्रदान कर सम्मानित किया गया।

- कर्नल हिम्मतसिंह पीह

बीकानेर व जोधपुर जिला बैठक

बीकानेर

जोधपुर

14 फरवरी को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन बीकानेर की जिला बैठक का आयोजन महिला मंडल स्कूल, बीकानेर में किया गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय टीम के सदस्य श्री राम सिंह चरकड़ा ने संगठन के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए बताया कि सकारात्मक सामाजिक सोच वाली युवा शक्ति का संयोजन व समन्वय करते हुए उस ऊर्जा का समाज व राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम उपयोग ही संगठन का उद्देश्य है। उन्होंने संगठन द्वारा अभी तक किए गए कार्यों से भी संभागियों को अवगत कराया। वर्तमान में संगठन द्वारा ईडब्ल्यूएस आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने व सरकारी क्षेत्र में राजस्थान से बाहरी व्यक्तियों पर राजस्थान के मूल निवासियों को वरीयता देने के लिए चलाए जा रहे अभियान के बारे में बताया गया। गोपाल सिंह पुंगल ने संगठन के अधिकाधिक विस्तार के लिए तहसील स्तर पर ऊर्जावान युवाओं की टीम बनाकर उन्हें दायित्व दिए जाने का सुझाव दिया। नरेंद्र सिंह जी हदा ने फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों को समय की आवश्यकता बताते हुए सभी समाजों के मध्य समन्वय व सद्भाव निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया। राजनीति कार्यकर्ता सुरेंद्र सिंह ख्याली ने युवा शक्ति की ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों की ओर प्रवृत्त करने के फाउंडेशन के कार्यों को एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए राष्ट्र निर्माण की दिशा में कदम बताया । शिवकरण सिंह करणीसर ने विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों की तरह EWS वर्ग के लिए भी छात्रवृत्ति की आवश्यकता बताया। खींव सिंह सुल्ताना ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती वर्ष व 22 दिसंबर 2021 को मनाए जाने वाले हीरक जयंती कार्यक्रम में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन किस प्रकार सहयोगी बन सकता है, इस बारे में बताया। बैठक में बीकानेर शहर व ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं ने अपनी सहभागिता निभाई।

इसी क्रम में जोधपुर जिले की जिला स्तरीय बैठक भी रविवार, 14 फरवरी को जोधपुर के बनाड़ रोड स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में आयोजित हुई। बैठक संघ के जोधपुर संभाग प्रमुख व फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम के सदस्य चन्द्रवीर सिंह देणोक द्वारा पूज्य तनसिंह जी के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर प्रार्थना के साथ प्रारंभ हुई। श्री देणोक ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के परिचय के साथ ही उसके विस्तार व कार्य को लेकर विस्तृत जानकारी दी, उन्होंने लोकतांत्रिक व्यवस्था में संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान व सहभागिता निभाने के साथ ही उसे उपयोगी बनाने पर विचार रखे। बैठक में EWS आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने के लिए केन्द्रीय टीम की कार्य योजना में सहयोग के लिए सोमवार को जोधपुर के सभी उपखंड मुख्यालयों पर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपने की रुपरेखा बनाई। 28 फरवरी को प्रस्तावित पंचायतीराज प्रतिनिधियों की जिला स्तरीय कार्यशाला के आयोजन के बारे में चर्चा की गई एवं तत्संबंधी दायित्व सौंपे गये। जोधपुर जिले में विधानसभा वार सहयोगियों की टीम बनाने एवं विधानसभा वार फाउंडेशन के कार्य को गति देने के लिए पृथक पृथक बैठकर चर्चा की गई। बैठक में जिले के सभी विधानसभा क्षेत्र के सहयोगी उपस्थित रहे।

मुरलीपुरा में स्नेहमिलन

हीरक जयंती वर्ष के तहत जयपुर संभाग द्वारा 21 फरवरी रविवार को क्षत्रिय सेवा समिति, मुरलीपुरा, जयपुर के प्रांगण में विधिवत हवन कर पारिवारिक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। उपस्थित स्थानीय लोगों ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर व शाखाओं के अनुभव साझा किये। संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए तत्कालीन विपरीत परिस्थितियों के बारे में जानकारी दी जिनमें संघ की स्थापना हुई थी। तनसिंह जी द्वारा स्थापित श्री क्षत्रिय युवक संघ की वर्तमान में महत्ती आवश्यकता को विस्तार से समझाया व इस वर्ष मनाएं जाने वाले हीरक जयंती समारोह 2021 के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देते हुए अधिकाधिक संख्याबल में सहयोग करने हेतु निवेदन किया।

डीडवाना में कार्यशाला संपन्न

डीडवाना स्थित वीरवर दुर्गादास राठौड़ सभा भवन में 20 से 21 फरवरी को संघ के स्थानीय सहयोगियों द्वारा एक कार्यशाला रखी गई जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने उपस्थित समाज बंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्य प्रणाली की विस्तार से जानकारी दी। संघ के हीरक जयंती वर्ष में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों के बारे में शंभुसिंह आसरवा द्वारा जानकारी दी गई। आगामी 22 दिसम्बर 2021 को जयपुर में आयोजित होने वाले हीरक जयंती समारोह की भी चर्चा की गई। उपस्थित सहयोगियों द्वारा चर्चा कर निश्चित किया गया कि वे हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों में कैसे सहयोगी बन सकते हैं। कार्यशाला में डीडवाना, कुचामन, जायल, लाडनूं आदि तहसीलों के सहयोगी शामिल हुए।

23 अप्रेल को मनाया जाएगा 'शौर्य दिवस'

जैसलमेर के दूसरे शाके के नायक वीर दूदा- तिलोकसी का बलिदान दिवस 'शौर्य दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों के तहत यह समारोह आयोजित किया जाएगा। 23 अप्रैल को श्री देगराय मंदिर परिसर में होने वाले इस समारोह की तैयारियों हेतु श्री देगराय मंदिर परिसर में 19 फरवरी को विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में लगभग बीस गांवों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बाबू सिंह बेरसियाला ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के दौरान 75 बड़े समारोहों की कड़ी में जैसलमेर के दूसरे शाके के नायक वीरवर दूदा - तिलोकसी की शहादत को सम्मान देने व युवा पीढ़ी को संदेश देने हेतु यह आयोजन किया जा रहा है। हाथी सिंह मूलाना ने बताया कि दूदा- तिलोकसी ने अदम्य वीरता का परिचय देते हुए आत्मोत्सर्ग किया था। हम उनके सर्वोच्च बलिदान को भूल गए हैं अतः ऐसे आयोजन की महती आवश्यकता महसूस की जा रही थी। उन्होंने हर सम्भव सहयोग करने का आश्वासन दिया। तारेंद्र सिंह झिंझनियाली के निर्देशन में समारोह को लेकर प्रचार प्रसार की जिम्मेदारियां सौंपी गई।

भीलवाड़ा में रक्तदान शिविर संपन्न

प्रतिवर्ष की भांति भीलवाड़ा में प्रताप युवा शक्ति द्वारा 21 फरवरी को अपने पूर्व सहयोगी पुष्पेन्द्रसिंह की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों युनिट रक्त का संग्रहण किया गया। प्रातः 9.15 से शाम 6.30 बजे तक चले इस शिविर में सभी रक्तदाताओं को महाराणा प्रताप की तस्वीर भेंट की गई। रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करने राज्य के चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा, सांसद सुभाष बहेड़िया, बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष धर्मेन्द्रसिंह राठौड़, भाजपा के प्रदेश मंत्री श्रवणसिंह बगड़ी, विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी, विधायक जब्बरसिंह सांखला, पूर्व प्रधान हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा, कोटड़ी प्रधान करणसिंह बेलवा, नगर परिषद सभापति राजेश पाठक, उप सभापति रामलाल योगी, सरपंच संघ के अध्यक्ष शक्तिसिंह कालियास आदि भी उपस्थित हुए। संतोक बा दुर्लभ जी ब्लड बैंक जयपुर, रामस्नेही हॉस्पीटल भीलवाड़ा, अरिहंत अस्पताल व महात्मा गांधी अस्पताल भीलवाड़ा ने रक्त का संग्रहण किया।

संपादकीय

नई लड़ाई और हमारी तैयारी

पूज्य तनसिंह जी ने हमारी महान कौम के लिए लिखा 'वो कौम न मिटने पाएगी, ठोकर लगने पर हर बार, उठती जाएगी।' यह हमारी कौम की तासीर रही है कि हर ठोकर के बाद यह उठ खड़ी हुई है, इसी तासीर के कारण यह कौम सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक निरन्तर बनी रही है और इसके संरक्षण में भारतीय संस्कृति भी तमाम झंझावतों के बीच अपना अस्तित्व कायम रख पाई है। इस कौम पर इस दौरान समय-समय पर विभिन्न प्रकार के आक्रमण होते रहे। हर आक्रमण पहले वाले से नवीन एवं प्रखर होता था, यूं लगता था कि इस बार तो यह इस सदानीरा कौम को लील ही जाएगा लेकिन परमेश्वर की छत्र-छाया में पनपे इस कौम के पुरुषार्थ ने हर बार उस आक्रमण को विफल ही नहीं किया बल्कि यह कौम और अधिक मजबूत बनकर उभरी। विगत दो तीन शताब्दियों में हुए आक्रमण भी इसी प्रकार नवीन प्रकृति के ही थे और वर्षों से संघर्ष झेलती कौम ने इसको समझने में जरा देरी की और परिणामतः लगने लगा कि इस बार तो यह कौम नहीं बच पाएगी। आजादी का समय आते आते यूं लगने लगा कि अब इस कौम का अस्तित्व बचा रहना मुश्किल है क्यों कि इस बार का आक्रमण राजपूत पर नहीं रजपूती पर था। क्षत्रिय पर नहीं बल्कि क्षत्रियत्व पर था। रजपूती या क्षत्रियत्व की प्रासंगकिता पर प्रश्न उठाए गए, अस्तित्व की आवश्यकता पर प्रश्न उठाए गए और उपयोगिता को ही नकारा जाने लगा। हमारे आदर्शों को दकियानुसी कहकर अपमानित किया गया। हमारे प्रेरणा स्रोत शास्त्रों को गडरियों के गीत कहा गया। हमारे महान पूर्वजों की यशोगाथा को महाकाव्य नाम देकर कल्पित करार दिया गया। हमारे इतिहास को झुठलाया ही नहीं गया बल्कि उसे नकारात्मक स्वरूप में प्रसारित कर हमारे आत्म गौरव को ही आत्म हीनता में बदलने के लिए वातावरण बनाया गया। इस प्रयास का निश्चित रूप से हमारे पर प्रभाव पड़ा और हमारे में भी आत्महीनता ने अपने पैर पसारे। इसीलिए हमारे तथाकथित बुद्धिवादी (इंटलेक्चुअल) लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि हमारे सभी आदर्श Out of Date हो गए हैं, हमें जमाने के साथ जीने के लिए सिद्धान्तों की रट छोड़कर जमाने जैसा हो जाना चाहिए। लेकिन इन सबके बावजूद समाज में आत्म गौरव को जागृत रखने के प्रयास जारी रहे। इतिहास के सही स्वरूप को प्रकाश में लाने के प्रयास जारी रहे। क्षत्रियत्व की आवश्यकता को प्रतिपादित कर उसके अस्तित्व को समाप्त नहीं होने दिया और हमारे इसी पुरुषार्थ के कारण सत्ता का समस्त बल भी हमें समाप्त नहीं कर पाया। हमारे पूर्वजों के प्रति श्रद्धा के कारण समाज के सभी वर्गों में हमारे प्रति सद्भाव बना रहा और इस नई एवं अपरिचित ठोकर के बाद कौम गिरी जरूर लेकिन फिर से उठने के पुरुषार्थ को भी बंद नहीं किया। हमने फिर से एक उदाहरण संसार के सामने प्रकट कर दिया कि समस्त प्रकार के सत्ता प्रतिष्ठानों के प्रतिगामी प्रयत्नों के बावजूद हम जिंदा रहने में सक्षम हैं क्यों कि हमारी प्रेरणा के लिए हमारे पास हमारे पूर्वजों के त्याग एवं बलिदान की सुदीर्घ परम्परा मौजूद है। हमारे उन महान पूर्वजों के प्रति जनता की श्रद्धा आज भी बरकरार है और वह हमें जीवित रहने को प्रेरित करती है। लेकिन आज फिर एक नई प्रकार की लड़ाई हमारे सामने आई है। सत्ता प्रतिष्ठानों पर वोटों के सौदागर बनकर अधिपत्य जमाने को लालयित वर्ग अब हमसे हमारी सुदीर्घ पूर्वज परम्परा छीनने को उतारू है जिसकी प्रेरणा के बल पर हम तमाम प्रतिगामी दबावों के बावजूद हमारा अस्तित्व कायम रख पाए हैं। जन सामान्य में हमारे जिन पूर्वजों के प्रति उनके अद्वितीय त्याग एवं बलिदान के प्रति पूज्य भाव है उन्हें उन्हीं जनसामान्य को आगे कर हम से छीना जा रहा है और हम किंकर्तव्यविमूढ़ से बनकर कोई निर्णय नहीं कर पा रहे हैं कि क्या करें? इस बार का आक्रमण दोहरी मार करने वाला है। हमारे महान पूर्वजों को हमसे छीनने का प्रयास कर जहां हमारे आत्म गौरव पर प्रभावी चोट की जा रही है वही जिनके माध्यम से या जिनको आगे कर यह चोट की जा रही है उनके प्रति सोशल मीडिया आदि पर हमारी प्रतिक्रिया उनके और हमारे बीच स्थायी विभाजन भी बना रही है। सत्ता की फसल काटने के लिए यह आक्रमण करने वाला वर्ग किनारे खड़ा होकर हमारे दोहरे पराभाव का इंतजार कर रहा है और हम इस नई प्रकार की समस्या में उलझते जा रहे हैं। उदाहरणत हम राजा सुहेलदेव के लिए पासी समुदाय से उलझ रहे हैं तो मिहीरभोज के लिए गुज्जरों से उलझ रहे हैं। अभी तो यह शुरुआत है, इस देश की संस्कृति के नाम पर सदैव हमारा साथ पाने वाले लोगों का यह कुचक्र इतिहास पुनर्लेखन के बहाने हमारे किस-किस पूर्वज पर डाका डाल कर समाज के किस किस वर्ग को हमारे सामने खड़ा करेगा, इसकी शृंखला लंबी हो सकती है। ऐसे में हम क्या करें? क्या हम सोशल मीडिया पर हमारे पूर्वजों को अपना कहने वालों से उलझकर या उन्हें भला बूरा कहकर ही संतोष कर लेंगे? क्या हमारे उन वास्तविक विरोधियों को भी जी भर कर गालियां निकालने से ही हमारा हेतु सिद्ध हो जाएगा?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

'जो होना चाहिए, वह करना शुरू करें'

प्रायः सोशल मीडिया में या समाज की बैठकों आदि में यह बातें होती रहती हैं कि समाज को क्या करना चाहिए? उन बैठकों में आमंत्रित विशिष्ट लोग सबको सलाह देते हैं कि उन्हें क्या-क्या करना है? सुझावों की एक गठरी लिए हर कोई व्यक्ति घूमता रहता है और जब भी मौका मिलता है अपने उस बोझ को हल्का करने के लिए उन सुझावों को बाटंना शुरू कर देता है। जिस व्यक्ति ने किसी क्षेत्र विशेष में कोई विशेषज्ञता हासिल कर ली है तो वह तो यह मान लेता है कि उसके मस्तिष्क में तो समाज की सभी समस्याओं का हल विराजमान है और उसको अधिकार भी मिल गया है कि वह किसी को भी किसी भी विषय में सुझाव दे सकता है। कोई राजनेता बन गया है या कोई प्रशासनिक अधिकारी बन गया है। थानेदार बन गया है या खिलाड़ी बन गया है। लेखक बन गया है या कवि बन गया है। चाहे किसी भी क्षेत्र में तनिक सी विशेषज्ञता हासिल कर ली है तो समाज को वह समग्र रूप से सभी समस्याओं का हल बताने लगता है। वह यह मान लेता है कि मेरी इस विशिष्टता ने मुझे सर्व गुण सम्पन्न बना दिया है और मेरे इस छोटे से मस्तिष्क में समाज की सारी समस्याओं का हल समाया हुआ है इसीलिए उसकी बात सुनी जानी चाहिए। समाज में काम करने वाले सामान्य से वरिष्ठतम व्यक्ति के लिए भी उसकी यह धारणा रहती है कि इसे मेरी सलाह की आवश्यकता है इसीलिए मेरी बात मानी जानी चाहिए। उसके अनुसार समाज में वर्षों से काम कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता की अपेक्षा वह अधिक जानता है और उस कार्यकर्ता को उसकी सलाह को स्वीकार करना ही चाहिए। उसकी नजर में उस सामाजिक कार्यकर्ता का यह दायित्व है कि वह उसकी वह सलाह माने और उसके अनुसार कार्य करे। श्री क्षत्रिय युवक संघ में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का प्रायः ऐसे सलाहकारों से सामना होता रहता है। जो भी तथाकथित बड़ा आदमी मिलता है वह यह अवश्य कहता है कि संघ को क्या करना चाहिए? सोशल मीडिया ने तो ऐसे सलाहकारों का कार्य बहुत ही सरल बना दिया है और अब हर कोई सलाहकार बनकर आसानी से बता देता है कि समाज को या समाज में कार्य करने वाले को क्या करना चाहिए? इस आलेख का उद्देश्य ऐसे लोगों की सामाजिक भावना पर प्रश्न उठाना नहीं है। वे सभी समाज के प्रति प्रेम वश इस प्रकार के अभाव को महसूस करते हैं और चाहते हैं कि यह अभाव दूर हो इसीलिए उनका ऐसा चाहना गलत नहीं है। समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझने वाले हर व्यक्ति को यह अहसास होना ही चाहिए कि समाज में क्या-क्या अभाव है? साथ ही उसकी चाह भी होनी चाहिए कि ये सभी अभाव दूर भी होवें। इसी चाह से प्रेरित होकर वे सभी इस प्रकार की सलाह दिया करते हैं, सुझाव दिया करते हैं। यदि वे सुझाव देने वाले व्यक्ति उक्त अभाव की पूर्ति करने के लिए कदम बढ़ाते हैं, अपने आपको प्रस्तुत करने को तत्पर होते हैं तो उनका स्वागत किया जाना चाहिए, सहयोग करने का भी यथा संभव प्रयास करना चाहिए। प्रायः ऐसा कोई व्यक्ति माननीय संघ प्रमुख श्री के पास आकर अपनी बात कहता है, कोई चाह प्रकट करता है तो वे यही कहा करते हैं कि अवश्य ऐसा होना चाहिए, आप करना प्रारम्भ करें, हम आपका सहयोग करेंगे। जिस किसी ने ऐसा किया है उसे पर्याप्त सहयोग भी मिला है। लेकिन जो लोग मात्र सुझाव देकर बरी होना चाहते हैं, चाह प्रकट कर ही मुक्त होना चाहते हैं, ऐसे लोगों की उक्त चाह एवं सुझाव का भी कोई महत्व नहीं होता। ऐसे ही लोगों से निवेदन है कि आपकी चाह को पूरा करने की जिम्मेदारी उन पर मत डालिए जो पहले ही ऐसी अनेक चाहों के समग्र स्वरूप को पूरा करने के लिए यथाशक्ति संलग्न हैं। यह बात ही अपने आप में बेमानी है कि चाह आपकी हो और उसे पूरा कोई और करे। ऐसी ही बेमानी बातें करने वाले लोग प्रायः समाज में काम करने वालों से शिकायतें पाले बठे रहते हैं। विभिन्न मंचों पर अवसर मिलने पर वे इन शिकायतों को प्रकट भी करते रहते हैं और अंत में उनकी शिकायतें आलोचनाओं में परिणत हो जाती हैं। फिर उनकी चाह भी विकृत होकर केवल जो कोई कुछ कर रहा है उसका गलत सिद्ध करने तक सीमित हो जाती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रायः ऐसी विकृत चाहों को प्रकट होते देखता रहता है और उन पर मौन रहकर यथाशक्ति कौम की वंदना करने में संलग्न रहता है। लेकिन आवश्यकता यह है कि सुझाव देने वाला व्यक्ति, स्वयं द्वारा महसूस किए गए अभाव की पूर्ति की चाह रखने वाला व्यक्ति अपनी इस चाह को विकृत होने से बचाए, सद्भावी से आलोचक बनने की स्थिति तक नहीं पहुंचे। इसके लिए उसे अपनी चाह को कार्य रूप देने के लिए कदम उठाना ही पड़ेगा और यह भी अनुभूत सत्य है कि उसके उस कदम को सहयोग उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक मिलता है क्यों कि समाज ईश्वर का मूर्तिमान स्वरूप है और वह स्वरूप अपने हर घटक की सद्भावना में सहयोगी बनने को उत्सुक रहता है। बस आवश्यकता है कि हम सुझाव देकर स्वयं को मुक्त न समझें बल्कि उन्हें कार्य रूप देने में प्रवृत होवें।

पूना, जोगीदास का गांव व सैला के शिविर संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 13 से 15 फरवरी तक कामधेनु गिर गाय गौशाला डेरी फार्म जेजुरी (पूना) में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में मुम्बई, सूरत, बैंगलोर, पूना और महाराष्ट्र के अन्य स्थानों से 90 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर के स्वागत कार्यक्रम में शिविर संचालक नीर सिंह सिंघाना ने बताया श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षत्रिय के गुणों का बोध व उनका अभ्यास करवाता है। जिसमें शौर्य, तेज, धैर्य, कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना करना, दान देने का भाव, सबको समान दृष्टि से देखने का भाव हो वह क्षत्रिय है, संघ इन सभी गुणों का बोध करवाता है व उनको अर्जित करने का अभ्यास करवाता है। जो इन गुणों को अर्जित करने का प्रयास और अभ्यास करता हो व जिसमें न्यूनाधिक मात्रा में ये गुण हों वह क्षत्रिय है । शिविर में आए सभी शिविरार्थियों को इन गुणों को उपार्जित करने का अभ्यास करवाया गया। 15 फरवरी को विदाई देते हुए शिविर संचालक नीरसिंह सिंघाना ने कहा कि हमें यहां अलग तरह का वातावरण मिला, हम अपने आप मे परिवर्तन महसूस कर रहे हैं, एक-दूसरे के प्रति प्रेमभाव बन गया है। हमें जो यहां बताया गया उसे हमने ध्यान पूर्वक सुना इस कारण हमारे अंदर

पूना

बीज अंकुरित हुआ है। यह बीज का अंकुर फूटा है इसे हमें पल्लवित करते रहना है। संघ ने जो हमें मार्ग बताया है उसके लगातार संपर्क में रहें ताकि यह बीज प्रल्लवित व पुष्पित होता रहे। पूज्य श्री तनसिंह जी की बात समझना कठिन है परन्तु हमारे में जो बीज बोया गया है उस का नाश नही होने देने का कार्य हमारा है, हम वह कर लेंगे तो सब समझ में आने लगेगा। जो हम सत कार्य करते हैं उसका नाश नही होता है।

21 फरवरी से 23 फरवरी तक

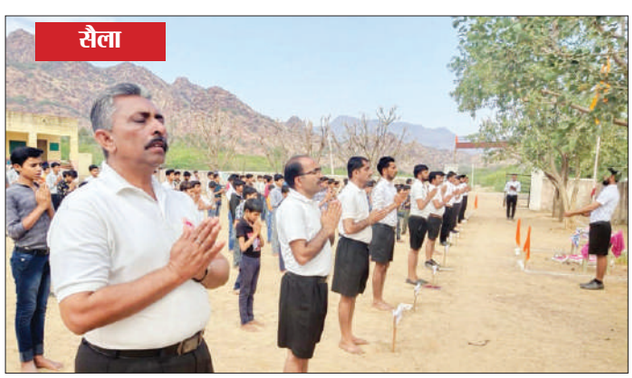
सैला

संघ का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर जोगीदास का गांव जिला जैसलमेर में संपन्न हुआ। शिविर में तेजमालता,जोगीदास का गांव, झिनझिनयाली, मोढा, रणधा, गज सिंह का गांव, चेलक, अड़बाला, शोभ, बेरसियाला, सोनू, पारेवर, पूनमनगर, राघवा, रामगढ़, शेरावा, खबडाला आदि गांवों के लगभग 160 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। शिविर के संचालन का दायित्व तारेन्द्र सिंह झिंझनियाली ने निभाया। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय त्याग व संयमी

जोगीदास का गांव

जीवन की प्रतिमूर्ति होता है। हमें यहां इन्हीं गुणों का अभ्यास करवाया गया है। यह अभ्यास हमारे जीवन में निरन्तर बना रहें। इसके लिए हम संघ के सम्पर्क में बने रहें।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के सिवाणा प्रांत के सैला गाँव में संघ का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर मामाजी के थान पर 15 फरवरी को संपन्न हुआ। शिविर के स्वागत कार्यक्रम में शिविर प्रमुख करण सिंह दूधवा ने सभी के भाल पर तिलक लगाकर संघ परम्परा के अनुसार स्वागत किया, उन्होंने कहा कि आज से चार दिन तक हम यहाँ संघ की कार्यप्रणाली को अभ्यास द्वारा सीखने का प्रयास करेंगे। चार दिन तक लगातार शिविर की दैनिक प्रणाली के अनुसार प्रातः 5 बजे जागरण से लेकर रात 10 बजे सोने तक विभिन्न कार्यक्रमों जैसे खेल, चर्चा, यज्ञ, बौद्धिक प्रवचन आदि द्वारा संघ की संस्कारमयी कर्म प्रणाली का अभ्यास करवाया गया। शिविर में दैनिक यज्ञ द्वारा विश्व शांति की कामना की गई, साथ ही संघ की हीरक जयंती की सफलता हेतु आहुतियां दी गई। शिविर में सिवाणा के आसपास के गांवों के लगभग 140 से अधिक युवा उपस्थित रहे। शिविर के अंतिम दिन विदाई कार्यक्रम में शिविर प्रमुख करण सिंह दूधवा ने शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उन्हें विदाई दी। उन्होंने कहा कि इन चार दिनों में सीखे गए गुणों को जीवन में उतारें एवं आगे भी ऐसे मेलों में आते रहें। शिविर में बालोतरा संभाग के संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी, सिवाणा के प्रांत प्रमुख भैरू सिंह पादरु, भवानी सिंह जीनपुर, हनवंत सिंह मवड़ी सहित सैला ग्राम के राजपूत समाज के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

सिंधल राठौड़ प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

जालोर के पांचोटा स्थित नागणेशी माता मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा वार्षिक महोत्सव एवं 21वां सिन्धल राठौड़ प्रतिभा प्रोत्साहन समारोह बसंत पंचमी के दिन संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत संघ की बालिका शाखा पांचोटा की स्वयंसेविकाओं द्वारा 'हम कदम यूं ही आगे बढ़ाते रहें' सहगीत के गायन से हुई। हरिपुरी जी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रोफेसर डॉ माधोसिंह इन्दा बालेसर ने कहा कि समाज को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंहजी, आयुवानसिंह जी व वर्तमान संघ प्रमुख श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर से सीख लेने की आवश्यकता है। मंच संचालन परबत सिंह खिन्दारागाव ने करते हुए बताया कि समाज को संगठित रहने की आवश्यकता है। लक्षिता कंवर कवलां व मूमल रोजड़ा ने समाज से दहेज प्रथा जैसी कुरीति को बन्द करने व बालिकाओं को हर क्षेत्र में आगे लाने का आह्वान किया। खुमानसिंह दूदिया ने जानकारी दी कि आगामी 22 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती बड़े समारोह के रूप में जयपुर में मनाई जानी है जिसमें समाज को अधिकाधिक संख्या में पधारना है। इस दौरान मन्दिर विकास हेतु जब्बरसिंह शंखवाली, प्रेमसिंह काम्बा, पूरणसिंह राजपुरा, गंगासिंह हिंगोला, कुन्दनसिंह कालोपादर, देवीसिंह मानपूरा आदि भामाशाहों की ओर से घोषणाएं की गई। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में इस बार भोजन प्रसादी व टेंट व्यवस्था नया सानवाडा सिरोही निवासी वाघसिंह परबतसिंह तथा उम्मेदसिंह लक्ष्मण सिंह की ओर से की गई । कार्यक्रम में राजपूत समाज की सत्र 2020-21 में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाली 120 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस दौरान ट्रस्ट के अध्यक्ष लाबूसिंह राठौड़ गुडा रामा, माधोसिंह कंवला, शिक्षा समिति के भवानी सिंह पांचोटा, सचिव गुमानसिंह रोडला समेत जालोर सिरोही पाली के सिन्धल राठौड़ सरदार व महिलाएं बडी संख्या में उपस्थित थे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम जारी

'हीरक जयंती वर्ष 2020-21' के अवसर पर 'संघ तीर्थ दर्शन' कार्यक्रम अंतर्गत 13 फरवरी को मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद ग्राम्य में हुए शिविरों के स्थलों का दौरा किया गया। शक्ति माता मंदिर, काणेटी, श्री वाणीनाथ महादेव मंदिर,निधराड में संपर्क कर वहां पर उपस्थित महंत श्री को यथार्थ गीता व वहां मौजूद सामाजिक लोगों को समाज चरित्र पुस्तक भेंट की गई। सेफायर फार्म हाउस,काणेटी में 2009 में ऐतिहासिक 11 दिवसीय उच्च प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ था। वहां उस जगह के मालिक श्री शौरभ भाई एवं किशोर भाई को यथार्थ गीता दे कर उनका आभार जताया। उन्होने बताया कि आपके शिविर के बाद से यह जगह पवित्र हो गई है। श्री लंबेनारायण आश्रम (उलारिया) सरखेज साणंद रोड, जी- अहमदाबाद में 1994 के P.T.C. शिविर से काणेटी गांव संघ के संपर्क में आया। बाद में यहां 1995 में I.T.C. शिविर भी हुआ। इसी शिविर के बाद से पूरे मध्य गुजरात के क्षेत्र में संघ का प्रचार-प्रसार हुआ। वहां पर मोजूद महंत श्री को यथार्थ गीता भेंट की। वहां मौजूद लोगों को भी यथार्थ गीता दी गई। इस कार्यक्रम में दिवानसिंह काणेटी, शक्तिसिंह वी काणेटी, देवेंद्रसिंह काणेटी, दिग्विजय सिंह पलवाडा की टीम ने संपर्क किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के सहयोगियों को संघ साहित्य के वितरण के कार्यक्रम के तहत 'समाज चरित्र' पुस्तक दी गई एवं संघ के 'हीरक जयंति वर्ष' की जानकारी दी गई। 14 फरवरी को सांचोर प्रांत में संघतीर्थ दर्शन यात्रा का प्रारंभ विरोल से किया गया। कार्यक्रम में महेंद्र सिंह कारोला ने संघ तीर्थ दर्शन यात्रा की भूमिका रखी। एडवोकेट प्रेम सिंह अचलपुर ने संघ की समाज के परिपेक्ष में उपयोगिता बताई। चंदन सिंह विरोल ने इतिहास के क्षत्रिय योद्धाओं को याद करते हुए उनके जीवन से शिक्षा लेने की बात कही। बडलेश्वर महादेव मंदिर कारोला में दोपहर 3:00 बजे कार्यक्रम रखा गया जिसमे प्रेम सिंह अचलपुर ने संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए बताया कि संघ शाखाओं और शिविरों का माध्यम से संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है। शाम 6 बजे दुदेश्वर महादेव मंदिर सिवाड़ा में कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रांत प्रमुख महेन्द्र सिंह कारोला ने संघ की बात बताते हुए बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ ने जो हमारे जीवन में संस्कार पिरोये हैं उनको सदा ही संजोये रहना तथा हमेशा ही सात्विक मार्ग पर ही चलते रहना है। 15 फरवरी को जालोर प्रांत के आहोर मंडल में पावटा गांव में स्नेहमिलन रखा गया। इसमें सेदरिया, पावटा, रसियावास गांव के सहयोगी शामिल हुए। पावटा में 2009 में शिविर हुआ था। स्नेहमिलन को पावटा सरपंच

तेजसिंह रसियावास, मदनसिंह थुंबा, खुमानसिंह दूदिया आदि ने संबोधित किया। इसी दिन अलावा में स्नेहमिलन रखा गया। यहां भी प्रहलादसिंह डोडियाली, वीर बहादुर सिंह असाड़ा, खुमानसिंह दूदिया आदि ने विचार रखे। दोनों जगह हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी गई एवं संघ की कार्य प्रणाली के बारे में चर्चा की गई। 21 फरवरी को नागौर संभाग के नेणिया गांव में स्नेहमिलन रखा गया एवं हीरक जयंती विषयक चर्चा की गई। जालोर संभाग के पाली प्रांत में 20 फरवरी को संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के तहत जोजावर के निकट के गांवों में सम्पर्क किया गया। प्रातः 9.30 बजे माडपुर में कार्यक्रम रखा गया जिसमें हीरसिंह लोड़ता ने संघ का परिचय देते हुए हीरक जयंती वर्ष की चर्चा की। प्रतापसिंह माडपुरा ने शिविरों में प्रशिक्षण की महत्ता बताई। 11.30 बजे देसूरी मंडल के गुड़ा आशकरण में स्नेहमिलन रखा गया एवं शाम चार बजे जोजावर में बैठक रखी गई। शाम 8.30 बजे बासनी में कार्यक्रम रखा गया जहां पूर्व में शाखा लगती थी। सभी जगह संघ का परिचय देते हुए हीरक जयंती वर्ष बाबत चर्चा की गई। संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक बनाए गए एवं साहित्य वितरण किया गया। 11 मार्च से प्रस्तावित पांचोटा शिविर की भी चर्चा की गई।

जयपुर में स्नेहभोज

केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में माननीय संघ प्रमुख श्री के प्रवास के दौरान सहयोगियों के परिवारों की महिलाओं ने कार्यालय में आकर भोजन बनाया एवं परिवार सहित संघ प्रमुख श्री के साथ भोजन किया।

सेवाड़ी में चौहान समाज महासभा की बैठक

सेवाड़ी में वीरवर महाराव मुंजाजी बलेचा के पावन धाम पर 17 फरवरी को स्थानीय विधायक पुष्पेन्द्रसिंह राणावत के मुख्य आतिथ्य एवं उगमसिंह कुमटिया की अध्यक्षता में चौहान समाज महासभा की बैठक संपन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से वीरवर महाराव मुंजाजी बालेचा के ट्रस्ट का अध्यक्ष शक्ति सिंह चौहान श्रीसेला को बनाया गया। बैठक में चौहान राजपूत महासभा और वीरवर राव मुंजाजी बालेचा ट्रस्ट के विकास कार्यों की चर्चा की गई तथा समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

राव बीदा जी राठौड़ की जयंती मनाई

सुजानगढ़, गोपालपुरा में 21 फरवरी को वीरवर राव बीदाजी राठौड़ की 578वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। 210 गांवों से पधारे बीदावत व अन्य सरदारों ने प्रातः 9 बजे राव बीदाजी की छत्री पर पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात आमसभा का आयोजन संस्थान के अध्यक्ष भूतपूर्व न्यायाधिपति करणीसिंह जी ने किया। संत महाराज उत्तमनाथ जी ने क्षात्र धर्म व क्षत्रिय वर्ण के महत्व पर प्रकाश डाला तथा संगठन की शक्ति का महत्व बताया। भरतसिंह सेरूणा ने राव बीदाजी की जीवनी पर प्रकाश डाला। सभा को समुद्रसिंह, जगमालसिंह पायली, बिन्दू कंवर गनोड़ा ने भी संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने बालिका शिक्षा, समाज संगठन तथा रतनगढ़ में छात्रावास निर्माण के बारे में विचार रखे। नत्थूसिंह बण्डवा ने क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती में अधिक से अधिक संख्या में पधारने का अनुरोध किया। कार्यक्रम का संचालन सुमेरसिंह ठठावता ने किया।

वीर दूदा तिलोकसी के बलिदान स्थल पर किया श्रमदान

हीरक जयंती वर्ष में 75 बड़े कार्यक्रमों के तहत वीर दुदा व तिलोकसी का शहादत दिवस मनाना तय किया था उसके उपलक्ष में पूर्व में भी 19 फरवरी को देगराय मंदिर जैसलमेर में एक मीटिंग रखी थी। 23 फरवरी मंगलवार को जसोड़ाटी क्षेत्र के सामाजिक लोगों द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वाधान में वीर दूदा तिलोकसी के बलिदान दिवस समारोह के सम्बन्ध में संघ कार्यालय में बैठक रखी गई जिसमें स्थानीय स्वयंसेवकों व सामाजिक कार्यकताओं द्वारा अपने अपने

सुझाव दिए गए। आगामी 23 अप्रैल को देगराय मंदिर में शहादत दिवस मनाने के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अलग अलग जिम्मेदारी दी व बलिदान स्थल पर जाकर पुष्पांजलि अर्पित कर विधिवत पूजा अर्चना कर प्रार्थना करवाने के साथ कार्यक्रम का आगाज किया गया, वहां श्रमदान किया गया। बताया कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम हमारे पूर्वजों के बने स्मारकों को देखें व उनकी सुध लें। उन्होंने इस जैसलमेर के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया और स्वयं अमर हो गए परन्तु उनकी शौर्य गाथा को जन जन तक पहुंचाने का प्रयास हमें करना चाहिए।

कानसिंह वैरावत का 453वां बलिदान दिवस मनाया

प्रतिवर्ष की भांति पाली जिले के छोटी रानी गांव में 24 फरवरी को स्थानीय वैरावत (राठौड़) परिवारों ने अपने पूर्वज कानसिंह वैरावत का 453वां बलिदान दिवस मनाया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के स्वयंसेवक हीरसिंह लोड़ता ने सतोगुणीय सामाजिक भाव के बारे में बताया। साथ ही हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

(पृष्ठ एक का शेष)

उपलब्धि...

22 दिसम्बर 2021 को संघ का हीरक जयंती कार्यक्रम जयपुर में होगा उसमे अधिकाधिक संख्या में पहुंचें। 2024 पूज्य श्री तन सिंह का जन्म शताब्दी वर्ष है,इसलिए आने वाले तीन वर्ष बहुत कार्य है, करने को। संघ के साहित्य का प्रचार प्रसार करें, घर पर ध्वजा लगायें, पूजा के कमरें में पूज्य श्री की तस्वीर लगाएं। केन्द्रीय कार्यकारी रेवंतसिंह पाटोदा ने बैठक के प्रारंभ में कार्यशाला के विषय के बारे में बताते हुए कहा कि हम सामूहिक शक्ति के रूप में स्वयं के और समाज के किस प्रकार से अधिकतम उपयोगी हो सकते हैं इस पर चर्चा करना ही इस कार्यशाला का विषय है। हम साथ मिलकर कोई भी बात कहेंगे, किसी भी अधिकारी से मिलेंगे तो उसका प्रभाव अधिक होगा। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का परिचय देते हुए आजाद सिंह शिवकर ने बताया कि समाज में सकारात्मक सक्रियता बढाने के लिए माननीय संघप्रमुख श्री के निदेर्शानुसार फाउंडेशन की स्थापना हुई। विगत दो वर्षों में फाउंडेशन इस बाबत कार्य कर रहा है और समाज का भी इसमें सकारात्मक सहयोग मिल रहा है। कार्यक्रम संचालन महेंद्र सिंह तारातरा ने किया।

इसी क्रम में 21 फरवरी को पाली जिले के राजपूत सरपंचों, पंचायत समिति सदस्यों, जिला परिषद सदस्यों एवं पार्षदों की कार्यशाला राणावास स्थित श्री गोविंद राजपूत शिक्षण संस्थान में रखी गई। बैठक के प्रारम्भ में परिचय के पश्चात फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य आजादसिंह ने फाउंडेशन की जानकारी देते हुए विगत वर्षों में हुए कार्य की जानकारी दी। केन्द्रीय टीम के अन्य सदस्य दिग्विजयसिंह कोलीवाड़ा ने पीपीटी प्रदर्शन के माध्यम से पाली जिले में स्थानीय निकायों में राजपूतों के प्रतिनिधित्व की जानकारी दी। तत्पश्चात इस कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए बताया गया कि पाली जिले में स्थानीय स्तर पर लगभग 15 प्रतिशत हमारा प्रतिनिधित्व है। यह प्रतिनिधित्व हमारा व्यक्तिगत न होकर सामाजिक बन जाए, इसे सामूहिक रूप से समाज की शक्ति बना दिया जाए इसके लिए क्रियाशील होना ही इस कार्यशाला का उद्देश्य है। आपकी यह शक्ति सामूहिक रूप से किस प्रकार समाज के लिए उपयोगी ह सकती है और किस प्रकार एक-दूसरे के लिए उपयोगी हो सकती है, इस बारे में विचार करना है। कार्यशाला में अनुराधासिंह चाणोद, पुष्पेन्द्रसिंह गुड़ा सूरसिंह, पशुपतिसिंह हाजीवास, कृष्णपालसिंह निबेड़ा, अमरसिंह केलवाद, नेपालसिंह पावा, परबतसिंह कानपुरा, मंजीतसिंह गुड़ारामसिंह, शिवराजसिंह बिंठिया, विक्रमपालसिंह, कुशालसिंह धनला आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने इस पहल में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया एवं अपने स्तर पर इस प्रकार की बैठकें निरन्तर रखने की बात कही। बैठक में हीरसिंह लोड़ता ने संघ के हीरक जयंती वर्ष के तहत हो रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं 22 दिसम्बर 2021 को जयपुर में होने वाले हीरक जयंती समारोह बाबत बताया।

हवाई अड्डे...

जयपुर के लिए उनके योगदान को देखते हुए उनके द्वारा लगभग 80 वर्ष पूर्व निर्मित हवाई अड्डे का नामकरण उनके नाम से किया जाए। साथ ही सभाध्यक्ष ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण की विसंगतियां दूर करने का आग्रह भी किया है।

श्री प्रताप...

उल्लेखनीय है कि सोशल मीडिया के माध्यम से भी अनेक लोगों ने इस बाबत अपना विरोध दर्ज करवाया था।

परमार...

संघ स्थापना के हीरक जयंती वर्ष निमित्त बसन्त पंचमी को राजा भोज की जयंती समारोह में रामसीन सरपंच चंद्रवीरसिंह ने श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा चलाए जा रहे कार्यों को समझते हुए समाज के निम्न स्तर के तबके को साथ लेने की बात कही। वहीं हनवंत सिंह देवड़ा बागरा ने हर माह समाज में इस प्रकार के कार्यक्रमों के निमित्त इकट्ठा होकर प्रजातंत्र में एकता का परिचय देने की बात कही। सुमेरसिंह धानपुर पूर्व सरपंच ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रणाली का अनुसरण करते हुए समाज के लिए अग्रणी कार्य कर समाज के युवाओं को सही दिशा में लाने की आवश्यकता बताई। वीरबहादुरसिंह ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की प्रणाली को समझाते हुए महापुरुषों की जीवनी और उनके आदर्श को लिपिबद्ध करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे गणपतसिंह भंवरानी ने राजा भोज के संबंध में वास्तुकला, सत्य और न्यायप्रियता का उदाहरण देते हुए राजा भोज को श्रद्धांजलि अर्पित की। जयंती समारोह में डूंगरसिंह आकोली और राजेंद्रसिंह आकोली ने स्वयं को परमार वंश और राजा भोज की गौरवशाली परम्परा के वंशज होने पर नाज की बात कही। उपस्थित अन्य समाज बंधुओं ने महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही।

(पृष्ठ चार का शेष)

नई लड़ाई...

कोई भी समझदार व्यक्ति इस प्रश्नों का उत्तर हां में नहीं देगा। ऐसे में हमारे सामने प्रश्न बरकरार है कि आखिर हम क्या करें? परिणाम पर चिल्लाने की अपेक्षा हमें कारणों पर जाना चाहिए और कारण यह है कि जिस संपत्ति की सार संभाल नहीं की जाती है उस पर कोई भी मालिकाना हक जताने तैयार हो जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के काम से उज्जैन जाना हुआ। दुर्गा बाबा की समाधि के दर्शन कर वहां जयंती मनाने की बात वहां के स्थानीय समाज बंधुओं से की तो उन्होंने बताया कि उनके वहां तो दुर्गादास जी की जयंती तेली समाज मनाता है वे उन्हें अपना पूर्वज मानते हैं। वहीं एक दिन रात को गोगाजी की निशान यात्रा की आवाज सुनी तो पता चला कि वहां तो हरजिन लोग गोगाजी को पूजते हैं, उनका कार्यक्रम है। यह एक उदाहरण है कि जब हम हमारे पूर्वजों की सुध नहीं लेंगे तो किस प्रकार वे दूसरों के पूर्वज बन जाएंगे और फिर हमारे पास केवल प्रतिक्रिया देने के सिवाय कोई उपाय शेष नहीं बचेगा। इसीलिए हम पार्टियों को दोष देवें, देश के बुद्धिवादी वर्ग को दोष देवें या हमारे विरोधियों को दोष देवें, इससे पार नहीं पड़ने वाली और इससे कुछ विशेष होने वाला भी नहीं है क्यों कि जो हमारे विरोधी हैं, जिनके हित हमें लक्ष्य बनाने से सधते हैं वे हमारे शिकायत करने से, दोष देने से और रोना-रोने से नहीं रुकने वाले। इसका स्थायी उपाय तो इतना शक्तिशाली बनना है कि कोई हमारे साथ गलत करने से पूर्व विचार अवश्य करे। शक्तिशाली बनने की एक सतत प्रक्रिया है, आवश्यकता है कि हम उसमें संलग्न हों उसमें तीव्रता लाएं और साथ ही हमारे अपने पूर्वजों को उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु स्मरण करें। उनकी जयंतियां, पुण्यतिथियां या स्मरण दिवस मनाएं, हम उनके बारे में जानें एवं हमारी आने वाली पीढ़ी को भी उनके बारे में बताएं। ऐसा करने पर कोई भी मार्ग चलता उन पर मालिकाना हक नहीं जता पाएगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी प्रक्रिया को धरातल पर उतार रहा है।

मंत्री के प्रवास में स्नेहमिलन

केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली के कलकत्ता प्रवास के दौरान वहां निवासरत राजस्थानी समाजबंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया। मांगूसिंह परिहार के आवास पर आयोजित कार्यक्रम में सभी ने साथ भोजन कर पारिवारिक भाव बढ़ाया।

पुलिस कर्मचारियों ने बनाई लाईब्रेरी

पाली स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में पाली जिले में कार्यरत राजपूत पुलिस कर्मचारियों ने मिलकर पूज्य तनसिंह जी के नाम से एक लाइब्रेरी का निर्माण किया है। जिसमें छात्रावास में रहने वाले व अन्य राजपूत विद्यार्थी अध्ययन कर सकेंगे। 19 फरवरी को उसका लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संत समताराम जी ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी भगवान कृष्ण की परम्परा के महापुरुष हुए, हमें उनके द्वारा बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

कवि 'दीप' की पुस्तक डिंगल रसावल का विमोचन

बाड़मेर के डिंगल कवि व साहित्यकार दीपसिंह भाटी 'दीप' द्वारा डिंगल काव्य शैली में लिखी गई सद्य प्रकाशित पुस्तक 'डिंगल रसावल' काव्य संग्रह भाग-1 के द्वितीय संस्करण का विमोचन जोधपुर दईजर स्थित ओटीसी पुंगलिया रिसोर्ट में 'काव्य कलरव समूह' के चतुर्थ वार्षिकोत्सव के दौरान वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् जालोर विधायक श्री जोगेश्वर गर्ग, शिक्षाविद् जहूर खां, डॉ आईदानसिंह जी भाटी, ठाकुर नाहरसिंह जी जसोल, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो. हाकमदान चारण, आई .ए. एस. एस. के. लांगा, राजस्थानी मासिक पत्रिका माणक के संपादक पदम मेहता, सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी मोहनसिंह जी रतनू, कविराज डूंगरदान जी आशिया, समाजसेवी उद्यमी विष्णु पुंगलिया व सह आचार्य डॉ गजादान चारण 'शक्तिसुत' सहित राजस्थान की नामी साहित्य हस्तियों के कर कमलों द्वारा सैकड़ों साहित्यकारों की मौजूदगी में किया गया। समारोह संयोजक कवि मोहनसिंह रतनू ने बताया कि बाड़मेर के हिंदी व्याख्याता कवि 'दीप' द्वारा लिखी गई 'डिंगल रसावल' पुस्तक में कुल 41 छंद-रचनाएं 5 खंडों में विभाजित हैं जिसमें क्रमशः आराधना खंड, सूरवीर सुजश, महापुरुष बखाण, कुदरत कोख और हेत रो हैलो खंड है।

सांवलसिंह मोढ़ा को मातृशोक

कुम्पसिंह मोढ़ा

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सांवलसिंह मोढ़ा के छोटे भाई **कुम्पसिंह मोढ़ा** का 28 जनवरी को देहावसान हो गया। इनके पुत्र छगनसिंह मोढ़ा व उगमसिंह मोढ़ा तथा भतीजे भवानीसिंह, भगवती सिंह व पुष्पेन्द्रसिंह भी संघ के स्वयंसेवक हैं। परमेश्वर इन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें व शोक संतप्त परिवार को हिम्मत प्रदान करें।

रामप्रताप सिंह चुई का देहावसान

रामप्रताप सिंह चुई

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **रामप्रताप सिंह चुई** का 12 फरवरी को देहावसान हो गया। इनका प्रथम शिविर 1952 में जोधपुर का प्रा.प्र. शिविर था। इन्होंने कुल 20 शिविर किए। संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक शिवबक्ससिंह चुई इनके बड़े भाई एवं शंकरसिंह इनके छोटे भाई है। प्रभु दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री भूपेन्द्रसिंह,
सावर, पूर्व प्रधान व समाजसेवी

श्री भंवरसिंह,
पलाड़ा, समाजसेवी व राजनेता

श्री शैलेन्द्रसिंह,
पिपलाज, समाजसेवी व ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष (केकड़ी)

स्थानीय निकाय चुनावों में अजमेर जिले से निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

विजयी पार्षद :
1. नगर निगम अजमेर : श्री देवेन्द्रसिंह शेखावत, श्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, श्री पृथ्वीसिंह गौड़, श्री गजेन्द्रसिंह रलावता, श्रीमती अंजना शेखावत।
2. नगर परिषद किशनगढ़ : श्री दिनेश सिंह राठौड़, सिरसुं, श्री हिम्मतसिंह शेखावत, श्री मनेन्द्रसिंह खंगारोत, श्री सुरेन्द्रसिंह शेखावत, श्री मनीष सिंह खंगारोत।
3. नगरपालिका केकड़ी : श्रीमती इन्दु कंवर भीमपुरा
4. नगरपालिका सरवाड़ : श्रीमती छंगनकंवर पीपरोली।

देवेन्द्रसिंह बाज्यास,
पार्षद, नगर निगम, अजमेर

दिनेशसिंह राठौड़ सिरसुं,
सभापति, नगर परिषद, किशनगढ़

श्रीमती छगन कंवर पीपरोली,
अध्यक्ष, नगरपालिका, सरवाड़

श्रीमती इन्दुकंवर
भीमपुरा, पार्षद, नगरपालिका, केकड़ी

शुभेच्छु

एडवोकेट अमरसिंह, दाबडदूंबा, अजमेर	**राजेन्द्रसिंह भांवता,** (सेवानिवृत) अजमेर	**उदयसिंह तोलामाल,** अध्यक्ष राजपूत सभा किशनगढ़	**रावतसिंह डूंक्या,** किशनगढ़	**गोगसिंह नगर,** किशनगढ़
कर्णसिंह (पिन्टूबन्ना), किशनगढ़	**मंजीत कंवर,** सरपंच पाटन, किशनगढ़	**शिवसौरभ सिंह बरुण,** किशनगढ़	**रिया शक्तावत,** सरपंच पिपलाज, केकड़ी	**हंसकंवर** सरपंच, कालेडा कृ.गो., केकड़ी
भगवानसिंह देवगांव हाल केकड़ी	**विक्रमसिंह सांखला,** राजपूताना कलेक्शन, केकड़ी।	**चांदसिंह सूंपा,** सरवाड़	**भंवरसिंह फोजी,** खीरियां, सरवाड़	**किशनसिंह खीरीयां,** सरवाड़
विक्रमसिंह खीरीयां, सरवाड़	**नाहरसिंह पीपरोली,** सरवाड़	**अर्जुनसिंह पीपरोली,** सरवाड़	**विजयराजसिंह जालिया,** सरवाड़	**भरतसिंह सांपणदा** केकड़ी

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org